सिद्ध रुस्तमजी रै जीवन माथै आधारित

सिद्धराज

[चरित काव्य]

सूर्यशंकर पारीक

कुलगुरु प्रकाशन, बीकानेर

प्रकाशक कुलगुरु प्रकाशन, बीकानेर
संस्करण प्रथम सं० २०३६ वि० १९७८ ई०
मूल्य रुपये १० ००
मुद्रक मुद्रण मन्दिर बीकानेर

SIDDHARAJA Surya Shankar Pareek
Kulguru Prakashan Bikaner Price Rs 10 00

प्रकाश-किरण

ज्यूं कै कुळगुरु-प्रकाशन रो मूळ उद्देश्य नूं वै-जूनै राज-
स्थानी साहित्यनै पोथी-रूप देय र लोगां रै सामैं ल्यावणो है, पछै
ओ साहित्य भावैं निजूकथणी हुवो अर चावैं सम्पादित। प्रकाशन
री पलड़ी पोथ्यां राजस्थानी महाकाव्य 'धरती' अर सिद्ध
जसनाथजी रो सिरलोको' नाव री छपी [illegible] पण राजस्थानी
साहित्य-प्रेमियां सूं घणो आदरीजी अर 'धरती' नैं तो दो नामी
प्रतिष्ठित पुरस्कारां—'विष्णुहरि डालमिया पुरस्कार' दिल्ली अर
'राजस्थानी ग्रजुएट्स नेशनल सर्विस एसोसियेशन' बम्बई—
सूं सम्मानित पण हुई। 'सिरलोकै' भी [illegible]
तथा जसनाथी-सम्प्रदाय रै [illegible]
वधायो।

'सिद्धराज' रा चरित नायक सिद्ध रुस्तमजी राजस्थान रा, खासकर धोरा-धरती 'थळी प्रदेश' रा, लूंठा महापुरुष हुया है जिका री साहित्य नै सांस्कृतिक देन आखै देश सारू गौरव री चीज है। अैड़ै महापुरुष रै बाबत पोथी री छपणो आपां सारू घणै गुमेज री बात है। आशा है 'धरती' अर 'सिरलोको' रै दाईं री दाईं 'सिद्धराज' पण आप सगळा मोकळै कोड-चाव सूं अंगेजसो।

साहित्य हेताळवां, विद्वानां अर पाठकां जे इण पोथी री भी सार अर अपणेस करी तो प्रकाशन आपरै मिशन में सफळ हुयो मानसी। इण लेखै आप सूं आमना घणी राख र चालां।

—विमल पारीक

म्हारै कानी सू

सिद्ध रुस्तमजी राजस्थान म जसनाथी सप्रदाय रा नावजादीक महापुरुष हुया है। दिल्ली र औरगजेब जिस कट्टर मुसलमान बादशाहन आप री सिद्धि रो परचो देय र आपर लवज मे कियो। उण र आग ओखी बिरिया मे आपर पथ रो आबरू उबारी। आप री ओकात अर आप र बूत पर उण सु आप रै पथ सारू आख भारतखड मे नगारा जोडा अर नीसाण लेय र बजावता थका घूमण रो परवाणों लियो। लोगांनै धरम साधण सारू अर कूड़पणो मिटावण वेई जसनाथी पथ म दीक्षित किया। पथ रे बाडी-मिदरा री जाबतै सु रुखाळो राख र उण री मुरतब बधायो। पथ र साहित्य अर, गायबेन अलघ ऊच आसण माथै थरपायो, जिक सू उण रा सास्कृतिक पक्ष आजलग पण सातरा अर उजागर है।

इण वेळै 'अग्नि नृत्य'नै एक ओपत ढाळै ढाळयो । उणान जोगतो मान अर रूप देवण मे सिद्ध रुस्तमजी री भरोसै बद सू घना आभ धरती बिचाळ कदे ही भुलाई नी जावली ।

धरम अर नीति री जिको बरतारो सिद्ध रुस्तमजी बरतायो बो पथ सारू प्रखज मेढ बण्यो जिक री पथनै आजलग पण घणो गुमेज है ।

सिद्ध रुस्तमजी आप खुद 'क्रिसन व्यावलो' जिसो सास्कृतिक काव्य बणायो न मोक्ळ ही सबदा री सरजणा करी जिका आज ताई गाईजता गुणीजता पथ री हेमाणी ज्यू आपा सगळां र सैमु ड हैं । जस नाथी पथनै खिडळ मिडळ हुवण सू बचायो । धरम सारू बद री सरधा अर भावनानै कस र काठो राखणैं री भावना भरी ।

महापुरुष सगळा रै सीर री सपत्ति हुव जद सिद्ध रुस्तमजी खाली जसनाथी सप्रदाय रा हीज नीं आख देश रा पण घणा राजस्थान र 'थळी प्रदेश' रा आपा रा गौरवशाली महापुरुष है । मालसर (चूरू) गाव मे उणां री तीरथ सैंतूल जमाळो' धोरो (जमा आळो धोरो जमा माळी छात अथवा रुस्तम धोरो) आद्‌ू आसण है अठ आय साल शिवरात अर आसाज सुदी ७ न चोखळ री मेळो भरीज जागण लाग अर होम हुवै । छाजूसर (चूरू) गाव उणा री निर्वाण स्थली रै रूप मे धराधाम री महतव नेडास्यो ।

ताकड सू पळटो खावत जुग में परापरी सू बध्योडा मोलमान पण बदळीज । आज तांइ तो जसनाथी जमा जागणां मे रुस्तमजी रा कीर्ति गीत घणा ही फोरीजता दुसराईजता रया है पण अब की तर-तर मोळा पडता सी लखाव जिणकर स्यात रुस्तमजी जिस महापुरुष रो जीवन

वृत्त भी होळ होळ भुलाईजणों सरू हुय जावै, इण सोतर उणा री अख-कीर्ति आग सारू ज्यू-री ज्यू र'व इण वास्त 'सिद्धराज' नाव रा यो साव सीधो सरल काव्य लिख्यो है क इणन बाच सुण र पाधा न माया री जण बान चेत राख सक । प्रदेश र बीज पार्व रा बुदा पण अडो पाया मायर्व र अड आलीजा महापुरुष सु आपरी सैंद सावळसर कर सकै । आज र छाप जुग मे अडा जोगतो काम हुवणो ही चाहिज अर इतिहास री कडी मे भी बधेपो हुव ।

पुराणो चलगत म सिद्ध रुस्तमजी बाबत जसनाथी साहित्य में साख' रा अर 'कवित' रा सबद पेमोजी रतनोजी आद रा मिल पण नू ई चासणी मे आ काव्य एक फायद आळो फळ देसी । इण काव्य रा घणकरा आधार पण अडा ही सबद हैं । इण र किणी प्रसगनै में म्हारी तरफ सू नू वा की नळ्या भी है। इण मे जिको चमत्कारिकता लखावै है वा सैंन जूनी है ।

इण काव्य सु राजस्थानी भाषान कीं-न कीं बळ होज मिलसी ।

छद अर शैली मैं इण मे परापरी यकी होज राखी है । नू वपणान हठ बाध'र अगेजण आळा, जाणा नी बिदकला । सप्रदाय आळा री दीठ सु जे इण मे की कमी रय गई हुव तो धकल सस्करण मे सूल कर'र भेळ ली जावली । बिया मैं इण यक खासा सावचेती वरती है ।

सिद्ध रुस्तमजो मे सरधा-भावना राखण आळा साहित्यकारा अर पाठका जे इणनै नाव सा भो अपणायो अर थयोप्या तो म्हारो बा'ळा हरख बधसी । राजस्थानी चरित काव्या म जे इण री ओळखाण हुई तो घण काइ रो म्हार सारू वाल्हो बात हुवसी ।

इतरो मोग कै 'सिखमादेसर' भर 'थेडी'-चूरू जिल रा गाव है भर धनराजजी सिद्ध लिखमादेसर रा इण बगत रा मोजूदा महत है जिणां सू रुस्तमजी दीक्षा ग्रहण कीवी। बीजा साधू जागासर बताया जाय चुक्यो है।

इण री काई भूल चूक जे आपरै दीठ चढ तो बतावण री सेचळ उठावोला न सुधार र पढोला। म्हारै बेल्या रो घणो घणा धनवाद करू जिका मनै अइ काम सारू उत्साहित करयो।

मिगसर, २०३६ वि —सूर्यशकर पारीक

मंगलाचरण

(१)

गुरु गणपतनै कर नमस्कार
कर नमस्कार शारद माता
श्रीदेव सिवर जसनाथ जती
सिवरण कर सतगुरु सुखदाता

(२)

'सिघराज' तणो श्रो लिखो छद
जग मे चावो करणो चावू
सिघ सबद समापो सूल सदा
हित-चित सू गुण रुस्तम गावू

(३)

मन मात-पिता रै हरख हुवो
कुळ हरख हुवो श्राखी जहान
पग धीर पुरुष धरती मेल्या
चावो जुग हुयसी श्रो महान

(४)

मुरधर धोराळी धरती मे
श्री सावळदास चुहाण बसै
उण रै घर जायो डीकरियो
परताप उणी रै पाप नसै

(५)

निज गांव नांव 'थेडी' जिण रो
जिण रो है पण चौहाण धणी
धिन भाग बडो वाळो जायो
जिण री मैं'मा जग रयी घणी

(६)

विक्रम संवत शुभ सतरासै
शुभ घणा मोकळा तिथ्थ-वार
सुख करण हरण दुख जगत-जाळ
सिध रस्तम लिनो घर औतार

(७)

जद बाळसाद दीनो बाळक
तो ओम-ओम आवाज हुई
सब हुवा अचंभित सुणी जका
आ बात जगत मे हुई नुई

(८)

सोनै रो बागो हरख थाळ
बाळक घर जायो चौहाण
मु' माग्यो नेग मिल्यो जिणनै
हाजर भूवा बेटी धा'णा

(९)

सोनै-छुरियै नाळो मोळ्यो
दाईनै मिलियो नेगचार
घर धणी बडेरण घाल्या है
मोत्या रा आखा भरे थाळ

ज्योतिषी

(१०)

दे हाथ सिरीफळ, पाडेनै–
तेड़णनै तेडो तेड़ायो
पाडे घर आया दे आसण
आदर कर नखतर बुझवायो

(११)

कह सांवळदास सुणो पांडे
किण नखतां जायो डीकरियो
पतडो खोल्यो बाच्यो पिंडत
भल नखना जायो डीकरियो

(१२)

कह सुणो, ज्योतिषी सांवळनै
ओ मोटो मिनख हुवै जग मे
जैड़ो गोरख जसनाथ हुवो
ओ चालैलो साचैं मग मे

(१३)

वाजैलो घूसो इण आगै
राजा म्हाराजा नुय चालै
राखैं मरजादा धरम तणी
ओ पाप करतानै पालै

(१४)

इण रै केन्दर मे राज-योग
ओ राज करैं का जोग धरैं
पूजीजैलो आखै जग मे
पापीड़ा इण सू घणा डरैं

(१५)

पण नेष्ट जाग इक और पड़ै
सुख मात-पिता रो लिख्यो नहीं
बाळापण दुख मे बीतै
बीजो कोई दुख दिन्यो नहीं

(१६)

भावी, भावी रै वस

जद सावळदास सुणी ग्रैंडी
सोच्यो इसतक मन मे पाछो
ग्रै तो पिंडतां री बातां है
कद कयो इणा रो सो' साचो?

(१७)

मायापति री ग्रद्‌भुत माया
जाणै कद काळ-सिरो बदो?
ग्रोळै पण भोळै मे घालै
ग्रो काळ ग्रचूको ग्रा फदो

(१८)

भावीनै कुण जाणी टाळी
ग्रा टाळी टळी ज कद किण सू?
श्रीराम जिसा नर पुरुषोत्तम
पण टळी न हे ग्रा तो उण सू

(१९)

नर भूल्या बैठ्या मौत जकी
जो नैहचैकर ग्रावै नरनै
मुनि ज्ञानी ध्यानी नर तपसी
वै भूलै मोतडली धरनै

(२०)

श्री सावळदास चुहाण जणा
भूल्यो है पिंडत री वाणी
वरतै ज्यू आगै वातडलीं
आखीजैलो वा इण का'णी

बाळापण

(२१)

हरखै सावळ मुख देख कवर
ज्यू कवळ-पो'प पर मस्त भवर
जिम खिलै कौमुदी देख चदर
मुखडो सुत सावळनै सुखकर

(२२)

डीकरियो डील अनोपम है
पग-पूत पालणै जाणीजै
जोगो-जुगतो कद रै' छानो
सापरतै पको पिछाणीजै

(२३)

बीजोडा बाळक जव-तिल रै
परमाण बधै उण री काया
चुहाण-कवर ज्यू चद्र-कळा
अग वृद्धि पर अद्भुत माया

(२४)

पट मास पगा दौडण लागो
बोलै तुतलो मीठी वाणी
छोटी ऊमर मे मोटा पण
सूरत लागै इण री स्याणी

(२५)

माता रै हरख बधै'स बधै !
दूजां रै हरख बधै देख्यां
स्याणो सुथरो सो'णो बाळक
जिण प्रेम बधै इणनै पेख्यां

(२६)

पग, मुदर बाजै पैजणियां
गळ बाघनखो ओपै जबरो
चोटी सिर लांबी एक हाथ
देख्यां जी-सोरो हुय सब रो

(२७)

तन रो कवळो पण सजोरो
ऊंची पण नाक सुवा-सारी
रस-भरया कवळ-सा नैण निरख
घण हरख बधावै महतारी

(२८)

है भव्य भाल चवडो ऊचो
चादडले ज्यू भळ-भळ करतो
आजान भुजा है पुरुप बडो
मुख-छवि है सुदर मन-भरतो

(२६)

जद एक वरस रो हुवो वाळ
जाणै इण पाच वरस खाया
ओ दो वरसा रो नौ जितरो
परतख ही देखण मे आया

(३०)

सांवळ वाळक रा लाड लडा
कर हेत हियै मे कोड घणा
सेना संतावो तेड़ायो
दिल्ली उण जाणो पडचो जणा

(३१)

पिता माथै सकट

गुहाण कोई मोटै ओदै
सेना रो तकडो इधकारी
शा' सदा साकडै पण रै'तो
मानीज्योडो निज दरवारी

(३२)

सब जाणै वोरंगशा केड़ो !
इस्लाम धरम रो तरफदार
दिन एक बादशा यूं बोल्यो
सावळनै करतो खबरदार

(३३)

इस्लाम धरम मंजूर करो,
मंजूर कियो थारा भाई
तूं रैय थातरै किया भला !
म्हारै आ बात नही भाई

(३४)

जे खुशी-खुशी मंजूर करै
तो बगसां थानै जागीरी
नातर धड़-शीश करां कडखं
तूं मौत समझलै है थारी

(३५)

पतसा री बात सुणी सांवळ
जाणै सौ घडा ढुळ्यो पाणी
पर-धरम करूं स्वीकार किया ?
जद दूध पीयो मैं क्षत्राणी

(३६)

सावळ मुख-विरतै भावानै
पढ लिया बादशा ज्यू पोथी
मेरी के शर्त मजूर नही ?
के हुवै नही ज्यू मैं बोथी ?

(३७)

भळ कडक पातसा यू बोल्यो
सावळ के सोच-विचार पड्यो
कह बात किसी मजूर तनै ?
के सोचरण लागो खडो-खड्यो !

(३८)

तै खायो मेरो लूरण सदा
तू भोग गाव ज जागीरी
अरणक्यो करैलो जे मेरो
देखो कैडी लागै प्यारी !

(३९)

तू तो पगला के चीज भला !
मोटा उमराव मजूर करै
इनकार करै मकदूर कठै !
जे करै कुत्तै री मौत मरै

(४०)

मोलत है बस तन्नै इतरी
जितरै आ शाम ढळ कोनी
तू आग धधकती जाण मनै
जिण मे के चीज बळै कोनी ।

(४१)

सुण सांवळदास उदास हुवो
जद मौत सिराणै आ झूली
किण विध कर मौत टळ मेरी?
आ सोची जद सासा फूली

(४२)

कर खमा-खमा चुहाण कैयो
फरमाणो वाजिब शहशाह
पण मन मे सोची बात इसी
मैं मरण तेवडो नो नैचाह

(४३)

पड नाठो सावळ तज दिल्ली
आयो घर घोडै एड लगा
आरजकुळ सरणो अगेजै
इस्लाम कदै नी, भाव जगा

(४४)

सावळ कह् भ्रम छोड़ जग मे
जीणै सू उण मरणो आछो
डडै रै डर सू आण धरम
मानै तो वो नर है काचो

(४५)

आ सोच'क सावळ आ घरनै
यू बोल्यो है निज नारीनै
मेरो तो मरण पकायत है
तू रयी पकी कह प्यारीनै

(४६)

बाळैनै ले छानै-छुळकै
थे जाया दूर निरायत मे
माणसनै ले साथै टुरज्यो
रिछपाळ हुवै इकायत मे

(४७)

म्हारो मत सोच किया चिन्तो
वरतीजैली ज्यू भावी है
म्हे धरम छोड जीवा कोनी
म्हारो तो मिरतू ठावी है

(४८)

ठुकराणी सती-सरूपा ही
कुळ मोटै मे जाई-व्याही
'वा आण-बाण कुळ-काण खरी
उण कियो ज्युंही पति समझाही

(४६)

चेतो मन राख पिहर चाली
सग चालो माणस आप खरी
किण कान पडी भणकार नही
किण किया खबर के बात सरी

(५०)

सावळ जद सीख सुणी श्रैडी
घोडै रै एड लगा चाल्यो
हेरू पतसा रा नावडिया
जातै सावळनै वा पाल्यो

(५१)

वेकार कैयो ललकार कहै
चाल्यो तो आगै खबरदार
सावळ पग रोप मड्यो सामैं
वो मरचो मार'र वीसचार

(५२)

घर आया हेरू दड़ाछट
ढूढो सूनो लख बाग मोड़
वा अेढा-मेढा सब ढूढ्या
अर ढूढ लिया घर गांव खोड़

(५३)

ठुकराणी आयी पीहरियै
पीहरिया पण काढी ज गळी
पतसा रो कोप झलै कोवी
वा हाथ झड़क दोना पैली

(५४)

पिहरिया माइत-सा मरग्या
नी सरण सांकडै वा रारया
ओ गांव छोड वेगा जावो
नी अठै मरोला; वा दाख्या

(५५)

विपता अर वोखै री वेळा
तन रा कपडा बणजा वैरी
बीजो कुण सा'य करण आवै
अैडी पण हिम्मत है कै री

(५६)

लाचारी जाग बिचारी वा
जद दुरी अठै सू क्षत्राणी
रुत करडी जेठ महीनै री
नी मिल्यो रास्तै मे पाणी

(५७)

मैडो री ठडी छाया मे
सुख भोग रही सुखदाई सू
पग कदे पावडो नी चाली
खेछळ कद हुवै लुगाई सू

(५८)

पण उदर जलमियोडै सारू
के-के न करै जग मे माता
पशु-पखी पण जाये सारू
मर कर राखै उण सुखसाता

(५६)

पीछम दिस मुख कर ठुकराणी
रोही रै मारग चाल पडी
नी रूखराय उण रोही मे
है कठै'क दीसै जाट खडी

(६०)

तावडियो भळ-भळ तपै घणो
धरती रो वरण हुवो तावँ
सनमनाट करती लू चालै
रजपूतण चालो डग लावँ

(६१)

हो काख केतळी जळ थोड़ो
टोपो-टोपो पिचियँ पायो
दो तिस रो पाणी कनै जको
वो लाग लुवा हुग्यो न्यायो

(६२)

है मिनख मिलणनै कठै अठै
पखी रो वन दरसण दोरो
सुन्याड खोड मे तीन जणां
कुण जगळ मे रं'सी सोरो

(६३)

घर मजला घर कूचा चाली
उतरी'र चढी आगै धोरो
चाली-चाली इतरी चाली
पण आयो नी अगलो तोरो

(६४)

इक धूप-छावळी-सी जाटी
विसराई उण हेठै लीनी
पण हलक सूकग्यो ठुकराणी
दासी उण री हालत चोनी

(६५)

दासी दे आडो ओढणियो
छाया कर लूवा ओट करी
पण ओट आंतरै-सी रैं'गी
आ' मौत निमाणी चोट करी

(६६)

खा चोट मौत री ठुकराणी
वीखै पाणी वीखै मरगी
बाळैनै मौत-मुखा काढ़ण
खुद आप मौत-मुख जा पडगी

(६८)

जद काळ अहेडी आ पूगो
मौतडली बाण लगावणनै
मा सूती खूटी ताण इसी
आवै न कोई जगावणनै

(६८)

वे' आटा जियो बुळाया है
वेवस जद करणो वियो पड़ै
है मौत किणी रैं कद साम्ह
आया न पावडो एक खड़ै

(६६)

आ बाळ डोकरो गिणै नही
किण रैं कितरो के काम पड़्यो
इण रा धेनड़िया नान्हड़िया
आ गिणै व रैंग्यो काम अडयो

(७०)

इणनै लेणो नी सुख-दुख सू
विपता'र विखै सू के लेणो
आ समो कुसम्मो गिणै नही
आ कद न मानै किण कैणो

(७१)

आ कैं'ता सुणता सब आया
आखर तो सगळानै मरणो
इत अजै बण्यो न अमर हुवो
जग सू प्रयाण सबनै करणो

(७२)

टूटै पण जद काचो ताणो
अपसोच मोकळो बध जावै
वेसमै मौत जाबक माडी
दुख घणो चौगणो हुय जावै

(७३)

बाळै री माता ठुकराणी
जुग-पीडा री मारी मरगी
बाळैनै छोड अधर वम्ब मे
दासी गळ विपता वा करगी

(७४)

नभ रै गोखै सू सूरजडो
ओ अजब-गजबै वृत्तात देख
सूरज पण सोच करै मन मै
आ कैडी लागी मीन-मेख

(७५)

दुख देख सक्यो न घणी ताळ
जद पीछम मुखडो कर चाल्यो
वन मे मन मे अधकार छोड
दुख घणो हियै दासी साल्यो

(७६)

मन दासी घोर उदासी मे
मोच्यो गा फांसी साथ मन
पण देख्यो जद वाळै थानी
कह पगली मैं यदू ह्यी ब्न ?

(७७)

कुण सारतार करसी इण री
भावी भावी रै वळ वरतै
भ्रम धीरज और मितर नारी
विपता मे राखै सब सरत

(७८)

हुग्यो उराने रातारळियो
सुन्याड़ वावनी, खोड वीच
डरनै भी डर लागै अट्ठै
पण दासी वैठी जाड-भीच

गेळारथ्रू सजोग

(७९)

आ भली करी भगवान राम
बीजोग माय सजोग हुवो
सग मिल्यो आ इक लारै सू
इण गेलै कोई चाल वुवो

(८०)

देख्यो सग कोई नार पडी
इक बीजी बाळक गोद लिया
पूछ्यो सग के अैलान अठै
मारग माथै के तोत किया !

(८१)

दासी कह म्हे विपता मारचा
उण रामकहाणी सा' गाई
बोली उपकार बडो मानो
थे सा'य करो मेरा भाई

(८२)

सग रामकहाणी सुण सगळी
वां रो पण जीव पसीज्यो है
कर तथाजुगत ठुकराणी री
माणस मन उणा पतीज्यो है

(८३)

टुर पडी साथ दासी सग रै
ले लियो बाळनै कधोळै
धोरै-ढाडै मारग चाल्या
कटियो है मारग सग बोळै

(८४)

सग आळा जाति रा ढाढो
सागो पण सेळै रो आछो
डूबतडै रै तिणखो सा'रो
जद जाणो सग ओ ही आछो

(८५)

सग गांव आलसर मे 'पूगो
रूपै घर लीनो रतवासो
दिन ऊगे जद टुरणै लाग्यो
'माच्यो है सग रै जी' रासो

पारखा

(८६)

रूपै री दीठ चढ्यो बाळो
जाणै चांदडलै रो टुकडो
ओड़ो पण रूपाळो बाळो
जिण ओप घणो रूडो मुखडो

(८७)

जैडै कुळ मे जलमै बदी
उण री पण आवै ओळ अदा
छोडो रजवाडी रीत भला
नी छानो रै'सी डोळ मदा

(८८)

कद राख रमाया भाग छिपै
कद चादो बादळ ओट छिपै
चाहे परण भेप बदळ देखो
तो ओध घराणै मोट छिपै

(८९)

पूछचो रूपै बाळक सोरू
ओ के पण बाळक थारो है
सुभराज करता कह ढाढी
घणिया ओ बाळक म्हारो है

(९०)

ओडा जद जलमै ढाढ्या घर
के जलमै जद राजा-राणी?
मोटा जद तो उमराव कवर
ढाढचा आगै भरसी पाणी

(९१)

कद आक बीज आम्बो ऊगै
कद करै गादडी सिंघ पैदा
के कुदरत गुण विसरावैलो!
ढाढचा घर ओडा कद बै'दा?

(६२)

ओ बाळक लाखां बाता मे
ढाढ्या री जाम हुवै कोनी
हीरो के काच कथीर रळै
के सोनै पीतळ कह सोनी

(६३)

आ खरी पारखा रूपै री
ओ बाळक मोटै कुळ जायो
ढाढीड़ा बेईमान कठै
लोनो बाळक किण बहकायो?

(६४)

कर मीट चौधरी करडी-सी
ढाढीडानै यूं कैया बोल
नी कदमकाळ बाळक थारो
साची कंदयो। सा' बात खोल

(६५)

आ बात छिपाई छिप नही
ज्यू आग छिपै नी गाभै मे
चाहे गहडम्बर धुंवर किती
सूरज नी छिपसी आभै मे

(९७)

केसर-कस्तूरी वास जिया
टाटी री ओट छिपै कोनी
ज्यूं थे जाणो इण बाळक री
बा, साची तैन छिपै कोनी

(९८)

लारो पण रूपै छोड्यो नी
वो लिया गयो ओदा-चोदा
घर-घर रो टेरो चाल्योडो
जद ढाढी इतरा कद भोदा ?

(९९)

जद बूढो ढाढी उठ बोल्यो
बोल्यो पण साची वातडली
रूपो कह बात जचण जोगी
मनगी मिटगी सा' आतडली

(१००)

स्याबास घणी दी ढाढ्यानै
दे रोक रुपैयो सीख दीवि
बाळकनै रूपै पुत्र मान
दासीनै बै'न बणा लीवि

लिखिया लेख

(१००)

है लिख्यो जठै दाणु-पाणी
चुगणो पड़सी है बात पकी
वे' लिख्या लेखड़ा जिया जिया
भोग्या सरसी आ बात नकी

(१०१)

गढ़-कोटा-महला जलम लियो
झूला मे झूल्यो बाळपणै
गोदी सैलग चढियो रै'तो
जिण लाड लडाया जणै-जणै

(१०२)

सुत गाव-धणी रो कवर पदे
नित मिनख वारणा पण लेता
कह, 'उम्र हजारो' वय हुवै
ब्राह्मण-चारण आसिस देता

(१०३)

बतळाता लोग जिकारो' दे
कर कोड मिनख मैं'मा करता
देइ रा लेख लिख्या न टळै
कइ दिन काढ्या भूखा मरता

(१०४)

ओ वाळो जाट घरे पळियो
पळियो खण दूध कदे मिलतो
खावणनैं ठडो-ठेरो पण
पैरचो गाभो फाट्यो-सिलतो

(१०५)

रस्तै मे मिलणों सू रुस्तम
बस नाव गाव-गुवाळ बण्यो
वो न्याय कचेडी वैठणियो
काळो न आखर एक भण्यो

(१०६)

जिण घर नोपत बाजा बजता
घुरतान सरस हा चौघडिया
पाळीज्यो जाट घरे रुस्तम
बकरी ज चरावै टोघडिया

(१०७)

ले बकरी रोही मे जाणो
दिन बदतै घर पाछो आणो
नित रो पण ओ आणो-जाणो
ले बाध पलै लेज्या खाणो

(१०८)

इपै आ बात विचार मना
इक बकरी रस्तमन दीनी
आ बकरी कर रस्तम कानै
ब्यायां सू दूध पिवो वयूनी ।

(१०९)

बेटो कर राख्यो हो घर में
पण वरस्यो हाळी कर उणनै
जायोड जैडा हेत कठै ?
रस्तम है छाग चरावणनै

(११०)

यूं बगत घणो लांबो बीत्यो
हाळीपो यूं करता-करता
दुख रुस्तम किए आगळ भाख
चाव्यो ज आक मरता-मरता

गोरख आय जगाय्यो

(१११)

दिन फुरता सो' जुग फुर जावै
वैरी पण सैण बणै छिण में
नाजोग मिनख लागै जोगो
कह दुनिया नी ओगण इण मे

(११६)

जद जाग्यो रुस्तम भाग वडो
तन-मननै घणो उजास करै
अघ जग तम ताप मिटी चापर
ओळै-दोळ परकास करै

(११७)

जद रुस्तम रूपं घर बकरी
जातो हो रोही चरावणनै
उण वगत बात इसड़ी-वरती
रुस्तमनै ज्ञान करावणनै

(११८)

गुरु गोरख रूपी गोविंदै
आ' वन मे नाद बजायो है
रुस्तमनै वन मे नाद सुणा
गुरु आपै आय जगायो है

(११९)

जद नादी तणी उवाज सुणी
सूतै सू रुस्तम जाग्यो है
वन मे न कोई दीठ चढ्यो
सोच्यो ईयां ही लागै है

(१२०)

चढ एक खेजड़ी पर रुस्तम
बो हाथ, कुहाडी बावणनै
जद बाढण लाग्यो डाळीनै
छाळचानै लूग चरावणनै

(१२१)

जद ना-ना-ना आवाज हुई
जाणै को' करै मनाही है
देख्यो रुस्तम ऊनै-बूनै
वो दीठ चढै पण नाही है

(१२२)

पाछो रुस्तम बाढण लाग्यो
तो भळे'क वा आवाज हुई
पण रुस्तम करी गिनार नही
बाढी तो ना-ना हीज हुई

(१२३)

रुकियो रुस्तम चौचक देख्यो
दीस्यो नी कोई नर-जायो
उण जाण्यो रोही भुभाडै
कुण ना कैवणनै इत आयो ?

(१२४)

वो भळे लूग छांगण लाग्यो
जद साधु आय उणनै रोक्यो
मत बाढ खेजड़ीनै वच्चा !
आं कळु री तुळछो, कँ' टोक्यो

(१२५)

जद उतर खेजडी सू रुस्तम
आयो है धरती पर नीचै
पण साधु निजरां नी चढियो
वो रियो अचर्भ रै बीचै

(१२६)

उण दिन तो रुस्तम छाळयांनै
ले टोर गाव पूगो वेगो
पण मन मे उथळ-पुथळ माची
वो वैम-अचर्भ मे रै'गो

(१२७)

दूजै दिन सागी ही जोगी
आयो हे रुस्तम रै कन्नै
सूतो रुस्तम निश्चितो हुय
साधु कहै पाणी पा मन्नै

(१३२)

रुस्तम बोल्यो छागळ रीती
पै'ली जे आतो तो पातो
अब तो पाणी पण कनै नहीं
क्यू आयो जळ नी, जद जातो

(१३३)

साधु कैय देख भरी छागळ
जद पण क्यू नी पावै पाणी
रुस्तम देखै जा' छागळन
जळ सू भरियोडी साचाणी

(१३४)

पियो बूक मांड साधु पाणी
कह जाणै गगाजळ पीयो
मीठो जळ तै पायो मन्नै
रै' घणो खुशी जुग-जुग जीयो

(१३५)

पीतहि पीतै साधु पाणी
हुग्यो अलोप वो खडो-खडो
रुस्तम सोचै के बात हुई ?
ओ सपनो-सो वृत्तांत बडो !

(१३२)

सोचै रुस्तम छागळ खाली
कूकर भरियो उण मे पाणी
ओ साधु है'क बीरोट्यो है ।
सोच्यो रुस्तम दिनगै ताणी

(१३३)

बीजै दिन वो सागी जोगी
आ बोल्यो बच्चा भूख लगी
आयो धाबरियै घोरै सू
मुझ बडी जोरकी भूख जगी

(१३४)

लाय-ला साधु को दूध पिला
ला दुहै दूध बकरी तेरी
तुझ बडा धरम होगा बेटा
यदि भूख मिटायेगा मेरी

(१३५)

कह रुस्तम बकरी सब होणी
जद दूध कठ सू मैं लाऊ?
जे हुवै ज बकरी व्यायोडी
तो दूध पकायत मैं पाऊ

(१३६)

साधु कहै जो बकरी तेरी
तू दूध काढ उसका प्यादे
तू बकरी कनै जा' तो सही
है दूध, उसी का तू ल्यादे

(१३७)

जा' रुस्तम बकरीनै देखं
देखं तो हांचळ दूध भरयो
है बाळी बकरी दूधाळू
रुस्तम अचूभो घणो करयो

(१३८)

ले पान आक रा डूडो कर
डूडो दूधं सू भर ल्यायो
देय डूडो साधु रै हाथां
जोगीनै दूधो है प्यायो

(१३६)

जोगी कह, थोडो तू पीलै
पण रुस्तम मन मे सूग करं
कह, नी बाबा थे ही पीवो
जोगी बूजं पर झाग धरै

(१४०)

जद साधु भाग बूजें पर धर
कह मैं पीता तुम मत पीवो
पी जोगी दूध अलोप हुवो
पण बाणी गूजें तुम पीवो

(१४१)

पी जोगी दूध अलोप हुवो
जद रुस्तम भूख लगी जबरी
भूखां मरतो रुस्तम नाठो
जाण्यो मैं दुह पीवो बकरी

(१४२)

आ देखें बकरी दूध कठ ?
आ तो जोगी री ही माया
भूखें रुस्तम डूहो चाट्यो
नाख्योडा भाग जका खाया

(१४३)

जद भाग खाय चाट्यो डूडो
रुस्तमनें ज्ञान हुयो ऊडो
अर हियें कवळ री कळी-कळी—
खिलगी, जग लाग्यो है भूडो

(१४४)

अब कुण चरावै बकरयानै
कुण करै गिवाळीपो झूठो
कुण करै गोव री हर-हूसर
कुण आवै-जावैलो पूठो

(१४५)

जद हुवो'क हिवडो सैंचदण
कुण बाथ अधारैंनै घालै?
वा सागण वसतु लाधी जद
हिरणा रै लारै कुण हालै?

(१४६)

जद हाट खुली साचै हीरा
कुण काच-कथीर विसावैलो?
गुरु साचो सौदो दिया बता
कुण कूडा खत्त खत्तावैलो!

(१४७)

जद इमरत मिलियो पीवणनै
कुण गदळो जळ पीवै नाडी?
जद ज्ञान-भारणी याद हुई
कुण आडैलो प्हाळी-आडी?

[

(१४८)

जद ज्ञान-सुरज रो उदै हुवो
कुण काळो रैण विहावैलो?
जद मिलणू हो सो परो मिल्यो
भूठै जग कूण सिहावैलो ?

(१४६)

इतरा दिन गया अचेत मे
अब हुयग्यो है चेतो साचो
जद डोर लगी सागी घर सू
जद कूण तणै ताणो काचो?

(१५०)

गुरु दरसण दीनो रुस्तमनै
जद पगला धरती टिक नही
की हरख-कोड रो पार नही
वो देख लियो, जो दिखै नही

(१५१)

सतरासै वरस अठाइस मे
सुदि माघ सप्तमी तिथि जाणो
गुरु गोरख रुस्तमनै मिलियो
जद थरपोजै थिरचक थाणो

(१५२)

वो उजड अेवाळचो मुड्ढ-मति
गुरु-किरपा आतम-ज्ञान हुवो
चालरिएयो छोड अडाव मे
उरण राज-मार्ग रो भान हुवो

(१५३)

अब रुस्तम बळ्यो ड्रिढ आसरण
थिर मार पलाथी धोरैं पर
जद बकरी मिण-मिण कर चाली
पोचाई दूजैं छोरैं घर

(१५४)

छोर घर जा' सब रूपैनै
रुस्तम री बात बताई है
बकरी उरण छोडी रोही मे
मैं लायो टोर पुगाई है

(१५५)

सुरण रूपै सोच्यो रुस्तमियै
लो पै'र बावळो भूडी है
भख मार भूख मरतो आसी—
घर, सोची रूपै ऊडी है

(१२६)
घर आयेनै दिन तीन हुवा
रूपो जद ले चाल्यो जेळी
सोच्यो मचकाऊ कमर मांय
माथो करदू खेळी-खेळी

(१२७)
आ' ऊबाकी रूपै जेळी
उण रा पण हाथ रया ऊचा
वो हाथ करण नीचा चावै
पण हुवा नही नीचै पुचा

(१२८)
कह रुस्तम सुण रूपा बावा!
जितरो हो अजळ चुग्यो परो
थे जावो घर थारै पाछा
अब मेरी पण मत आस करो

(१२९)
हरि होरां हदी हाट खुली
करमा रै आडी दाट खुली
थे के जाणो हरिलीलानै!
सुरगा री सीधी बाट खुली

रूप रा हाथ हुया साधा
छूटी जेळी जा दूर पडी
घबरा रूपै मागी माफी
मैं रुस्तम तै सू करी अड़ी

(१६१)

धोरै पर रुस्तम पलक लगा
बैठ्यो वो, नी हालै-चालै
उपराम जगत वैरागवान
कर भजन हियै हरिनै न्हालै

(१६२)

तप करता-करता कई मास
रुस्तमनै बीत्या धोरै पर
गुरु गोरख री आवाज हुई—
रुस्तम, सिषनै गुरु धारण कर

(१६३)

लिखमाणै श्री धनराज सिद्ध
गुरु करण जोग सारी बाता
जा' उण सू भगवा धारण कर
'जसनाथी पथ' मिलो खाथा

(१६४)

तप जोग जुगत नुगरै जन रो
अैळो पण जावैलो इसतक
ज्यू गगाजळ गरदभ माथै
वानी मे होम्यो घी जिसतक

जोगपट

(१६५)

गुरु गोरख आज्ञा शिरोधार
श्रीरुस्तम लिखमाणै आयो
कर सिद्धानै आदेश, कयो–
मैं भगवा लेवणनै आयो

(१६६)

धनराज सिद्ध उण वेळा मे
कूवै सू भडारै नाळो
नाळ मे वै' आतो पाणी
किण कारण सू रुकियो वा'ळो

(१६७)

धनराज सिद्ध हस कर बोल्या–
जे भगवा लेणा चावै तो
ओ पाणी पण रुकियो कूकर
दखू, इणगो भेद बताव तो

(१६८)

आ बात'क रुस्तम कह छोटी
फसियो गोहीरो नाळै मे
ओ कारण पाणी रुकणै रो
खोदो'र देखल्यो बा'ळै मे

(१६९)

सिध खोदचो काढ्यो गोहीरो
जो कारण रुकणै रो पाणी
सोच्यो सिध, सिद्ध बडो रुस्तम
गल जमीदोज री इण जाणी

(१७०)

रुस्तमनै दीना सिध भगवा
कर होम-जोत उण 'चळू' दीवि
'सत सबद' सुणा दी 'कानफूक'
पथ डिढ तणी वाचा लीवि

(१७१)

माथै कर मेल्यो थाप पीठ
वरदान घणा आसीस दीवि
रुस्तम गुरु-चरणा शीश निवा
घोरै जावण री सीख लीवि

(१७२)

जंकार सदा मगळ थारो
नीधो-विधो ज्ञाव सिद्धि भक्ति
गुरु-पथ धरम रा धणी चणा
कह धनराज सिध जागं शक्ति

(१७३)

रुस्तम जद गुरु सू अरज करी
लुळताई घणा नरमाई सू
म्हाराज कदे जे काम पड
चेतं मनं किया भलाई सू

(१७४)

म्हारै सारू जे काम हुयो
कर सू आज्ञा गुरु री पाळू
सिर माथै हुकम आप रो रख
बस पडतां कदे न मैं टाळू

(१७५)

सिध भेप धार भगवा लेकर
सिद्धां रै वो सागं रळियो
थरपणा सिद्धि भक्ति सासरा
रुस्तम धोरै आसरा वळियो

(१७६)

कर धूप-दीप गुरु होम-जोत
सेवा-पूजा कर चित-मन सू
पखी-पखेरू करै सार
जीवा प्रतिपाळ करै तन सू

(१७७)

जिग जोग समाधी कर ध्यान
गुरु-ज्ञान आतमा कर पिछाण
नित-अनित सत्य-मिथ्या विचार
आतमा-अनात्मा करै छाण

(१७८)

माया-मिथ्या विद्याऽविद्या
काया-छाया भर जगत-जाळ
ब्रह्मसार मोख-पद कर नितार
काटै कैटक सिघ कै'र-काळ

(१७९)

कर सारासार विचार घणो
श्रणभै कथणी मथणो चालै
सतसगत गोष्ठी करै साधु
धोरै पर सब भगवत भालै

(१८०)

रुस्तम रो भाव चौखळे मे
ओळैं-दोळैं उण मान घणो
डकीज्यो रुस्तम अर आसण
मब करै आघ घण जणा-जणो

दिल्ली रो परवाणो

(१८१)

आयो परवाणो दिल्ली सू
संताब सिधा दिल्ली आवो
चाल्यो 'जसनाथी पथ' किया
सो' भेद अठे आ बतवावो

(१८२)

थे रेख भरो नी धरती री
थे राज-तेजनै नी मानो
थे लाग-बाग भूग वेई
थे साव नटो पण नी छानो

(१८३)

थे पथ तणो परचार करो
ये करो न्यायबो अरथावो
ये होम-जिगन जग-जाप करो
ये पतसाहो मेटण चावो

(१८४)

अंडा अळछेप लगा पतसा
परवाणो दे अंदी भेज्यो
लिखमाणे दयो धनराज थको
दिल्ली पण आवण रो कंज्यो

(१८५)

अडो परवाणो ले अंदी
धनराज सिद्धनै पकडायो
बोल्यो बाचो थे आख खोल
आ कह अंदोडो अकडायो

(१८६)

बोल्यो कर भरपाई पायो
तारीख लिखो थे आवण री
चूक्या जे आवण मे दिल्ली
तो त्यारी शुस्स भरावण री

(१८७)

पतसा परवाणे मे लिखियो
दिल्ली आ परचो देणू है,
हाजर-नाजर परचो मांगा
परगट परचो पण लेणू है

(१८८)

जे परचै माही चूक पडै
जीता री कबर खुदीजेला
घाणी मे पीडै तेल जियां
सिद्धां थे बियां पिडीजोला

(१८६)

चालैली नी थोथी लप-लप
कोरी बाता रो काम नही
पतसा नी रीझै बातां सू
मारैलो जे है राम नही

(१६०)

नाटक-चेटक री बात नही
वो परतख परचो मागैला
परचै मे चूक पडै चिन्ही
सिर खाग पातसा खागैला

(१६१)

परवाणै मे ग्रैडी बातां
लिख भिजवाई है शाहशाह
'जसनाथी पथ' धरम साह
सा' पूछैलो पण शाहशाह

(१६२)

सिध देख्यो औंडो परवाणो
थर-थर कर थररावण लागो
सिध बाजा गुरु रै लार थका
म्हारो पण कद लागै थागो ?

(१६३)

पाकळ-बाकळ मन हुवो घणो
सिध सोचै, मरणैं री बारी
घर बैठा हा सुखदाई सू
पण, आ लागी जी'नै प्यारी

(१६४)

सिध रो जी' जागा छोड परो
चित चढग्यो चित्या री चकरी
अर हुवा सितगा सब ढीला
पडी हाथ कसाई ज्यू बकरी

(१६५)

जाणै छूट्यो हाथा वासण
जाणै मरतू सामै टकरी
सै'-सास डै'रकै पण चढग्या
सिध मे जद बीती है जबरी

(१६६)

मन री फुरणा सब वद हुई
सुन बापरगी गाढी ताई
सोचै सिध, लाज रहै किमतक ।
आ रैंसी जे राखै साई

(१६७)

सिध सोचण लागा खडा-खड़ा
इतरै मैं आई वात याद
भगवा लेती विरिया रुस्तम
जाती वेळा अै कया साद

(१६८)

सिद्धा जद काम पडै थारै
कर लीज्यो चेलनै चेतै
सेवा सारू हाजर रैं' सू
उण साद कया भगवा लेत

(१६६)

सिध सोच्या, इण सू काम वडो
कद ओखो विरियां आवैलो ?
तेडू रुस्तमनै धोरै सू
नातर तो इज्जत जावैली

(२०८)

आवण रो तेडो तेडायो
उत जीमो चळू अठै कीज्यो
पग जूती घालै जिती ताळ
आवण मे जेज मती कीज्यो

भरोसो गुरु थको

(२०९)

सिध रुस्तम देख्यो परवाणो
गुरु दाख्यो मुख सदेश सुण्यो
चित्या कैडी, रुस्तम सोचै
परवाणै रो सो' ज्ञान गुण्यो

(२१०)

आयो लिखमादेसर रुस्तम
उण सिधा तणो आदेश कियो
आशा-विश्वास भरी वाणी
बोल्यो गुरुनै क्यू क्लेश कियो

(२११)

क्यू सोच करो गुरुजी इतरो
मैं त्यार खडो दिल्ली जावण
मागैलो जो परचो पतसा
देऊला उण रै मनभावण

(२१२)

इतरा क्यू काचा पडो राज !
म्हाराज ग्राप रो मैं चेलो
मन सोळाना विश्वास करो
वो दयू परचो पतसा क'लो

(२१३)

जद मैं'र ग्राप रो म्हां माथै
छिन दिल्ली जावरा रो वो'ळो
ग्रो धरम-पथ रो काम बडो
उरा सारू धारचो ग्रो चोळो

(२१४)

जसनाथ सिद्ध रो नाव ग्रमर'
ग्राभै-धरती रै बीच रहै
तन-मन-धन ग्ररपरा है उरा रै
म्हे काम करां जोइ गुरु कहै

(२१५)

गुरु नाव पथ पर मर जावां
कर जावां जग मे नाव ग्रमर
काचै तन रा के टका वटै?
गुर-नाव तरा। जग करां खबर

(२१६)

तन काचो तिणसँ ज्यू टूट
माटी है माटी मे मिलसी
जे काम गुरु-पथ रै आवै
तो हियो-कवळ मेरो खिलसी

(२१७)

सिध-पथ धार जद जोग लियो
मैं काम करू म्हारै सारू
क्यू काची ताकू भ्रम त्यागू
क्यू वाचा गुरु रा मैं हारू ?

(२१८)

इण तननै जायो रजपूतण
रजपूती दूध उजाळूला
बाध्यो जाऊ जे तोप मुह
निस्चै गुरु आज्ञा पाळूला

(२१९)

गुरु रै समुख सिध रुस्तम जद
बोल्यो थे सोच मती ल्यावो
मैं दिल्ली जावण त्यार खड़ो
दयू परचो पतमानै ठावो

सौ हाथ सिरख मे थे मोवो
मत सोच करो थे राइ जितो
श्रीदेव जती री मैं'र घणी
जद दिल्ली जावण काम कितो?

दिल्ली-प्रस्थान

(२२१)

दस लफर सिध रुस्तम सागै
दिल्ली साम्ह वै त्यार हुवा -
लफर। रा लफर श्रोर घणा
वै उण सू श्रागै चाल वु'वा

(२२२)

सिध खेतोजी सिध बीजोजी
मिध रतनो मुमोजी भाई
मु.तोजी ठुकरोजी सागी
पांचाजी वीरमजी श्राई

(२२३)

मिध श्रोर वडा मिध पेमोजी
मिध पदमनाथ सिध ऊधोजी
मिध भारमल्ल सिध श्रोर घणा
सिध लिममादेमर भाग्रो जी

(२२४)

सिध वाध नगारा ऊठा पर
ले' हाथां में भगवो झण्डो
दिल्ली सारू सैं' त्यार हुवा
जा' करें पातसान ठडो

(२२५)

सब हुवा त्यार जद जावणनैं
आदेश कियो जा' आसण मे
सैं' हाथ जोड मिंदर आग
वा करी ज जोत हुतासण मे

(२२६)

नरवासनर मे जोत जगी
विश्वास जग्यो है अंतर मे
मजबूती आई तन-मन मे
ज्यू सगती जागैं मंतर मे

(२२७)

श्रीदेव जती री मै'र बडी
गुरुदेव सामनाकूल हुवा
बावो तीतर खुशिरो-खुशिरो
बोल्यो जद सुगन ज सूल हुवा

(२२८)

छत्री कर रयात चढ्यो दिल्ली
रुस्तम सिघ गुरु रै लाग पाय
गुरु पीठ थाप ग्रासीस दीवि
श्रीदेव गुरु जद करै सहाय

(२२६)

ग्रादेश किया ग्रासीस लीवि
सतपथ धरम रा पका सूर
उद्यमिया रै दिल्ली नेड़ी
पण *ग्राळसिया* रै घणी दूर

(२३०)

ग्रब डाक नगारा पडती जा
धड धीग नगारा वजता जा
जसनाथ गुरुनै सिवर घण
गुरु गोरखनै स' भजता ज:

सिद्ध आयो दिल्ली

(२३१)

सिध रुस्तम भक्त गुरु पथ रे
श्रीदेव मना दिल्ली ग्रायो
कस बाघ नगारा ऊठा प
निसाण 'लहरता सग लायो

(२३२)

दिल्ली रै आयो दरवाजै
दी डाक नगारा खडी चोट
आवाज सुणी सगळी नगरी
वै कप्या है जिण मना खोट

(२६३)

सुण डाक बादशा यू बोल्यो
के रूमी सूमी चढ आयो
वेगा जावो अर खबर करो
देखो दरवाजै कुण आयो ?

(२०४)

सिंघ आयो देश बिकाणै सू
जिणन पतसा है तेडायो
परचो मांगण सारु पतसा
सिंघ आयो लफर खेडायो

(२३५)

सिंघ आयो दिल्ली दरवाजै
उत सीढी एक मिली उणनै
उतराई सीढी धरती पर
सिंघ जीवत कर दीनो जिणनै -

(२३६)

पे'लो परचो सिध दियो अठ
मरियोडंनै जीवत करियो
वो काजीसा रो पूत उठो
जो भरी जवानी मे मरियो

(२३७)

सिध रुस्तम डेरा दिया लगा
दिल्ली-चौपड तम्बू ताण्या
जस री नोपत बाजण लागी
सिद्धांनै सब लोगा जाण्या

(२३८)

मुल्ला नै मुसाहिब मूसद्दी
आयो है काजी सहरपीर
आया है मोटा मिनख घणा
आयो है खुद मोटो वजीर

(२३९)

सिध डेरै पहरो दियो लगा
पाखरियांनै तेणात किया
कह करणी इण री देख-भाळ
इण माथै राख्या ध्यान दिया

(२४०)

दूजे दिन सिघनै ताकां मे
जड ताळा दिया लगा आगं
'पो पोळी सिघ डेरै माही
जद 'जोत' जती री है जागं

(२४१)

डेरै मे झालर शख बजै
अर वजै बाकिया भेर घणा
उत सरस नगारा घुर जोर
घी होमीजै है मणा-मणा

(२४२)

'वडराग सिद्ध मिल सब गावै
ओंकार धुन्न गूजै गै'री
चित्राकीजै जो सबद सुणै
ओळे-दोळै बैठ्या सै'री

(२४३)

आ खबर बादशा कान' पड़ी
सिघ ताक खोल बारै आगो
पतसा जद यू सोचण लागो
किण विघ सू सिद्ध हुवै भागो ?

(२४४)

ले सिधनै सोग हजूर हुवा
दीदार दीदारु रो करल
परचो मागैलो जो हाजर
खुद खुदावद दिल मे धरल

(२४५)

शाहशा कहै दरबारयानै
थे धरम हिन्दु रो करो नष्ट
ले गाय गळो काटरा वैठा
सिध-निजर चढै धम हुवै भ्रष्ट

(२४६)

ले करद कसाई गळी माय
विरधरा रै सारू गो-माता
रुस्तम रो धरम डिगावरानै
सब आ वैठा है वै खाथा

(२४७)

सिध कहै करदनै परै फैंक
रे पापी तू मत मार गाय !
दे पाच मोहर हैरां छोडू
नातर कहै काटू गळो गाय

(२४८)

सिध पांच मोहर दे-दे बोल्या
घाटा न किणी है बात ग्रठै
है खोसं खैर खुदाय घणी
ग्रा बोल छुडाली गाय बठै

(२४६)

ग्रो हाजर-नाजर सुण परचो
पतसा री ग्रक्कल चकराई
तावै पण बात ग्रणावणनै
पतसा दूजी वुध बपराई

(२५०)

पतसा रुस्तमनै यू बोल्यो
काचै डोरां रो तण तांतण
मैं निवाज गुदारू कूवै पर
तू ग्रा कर दिखळादे सागण

(२५१)

सिध कह्‌ बादशा सुण मेरी
क्यू गई ग्रक्ल तेरी मारी
कूवै पर चादर नाख पढ़ू
जद करामात देखी मेरी

(२५२)

सिघ कूप निवाज गुदार कहै
लै परचो सागै जको मांग
नातर मन्नै ग्रर पघ मेरै
कूड़ो मत ग्रावी क्यो साग

(२५३)

सिघ रा ग्रै करडा बोल जका
पतसानै लाग्या विप-घारा
उण मन मे घार-विचार लीवि
सिघ रा कूचा काढू सारा

(२५४)

चज सोच जमो खाडो खोदयो
खोरा सू उणनै भरवायो
झल-झल घप-घप करता खीरा
लपटा उठ लपटां लपटायो

(२५५)

सिघ कयो ग्रापरै लफरान
न सबद गावणा बद करया
मैं नी ग्राऊ जद तक पाछो
थे सबद गाय हरि ध्यान घरघा

(२५६)

कह टूट्यो जाणँ इद्र वज्र
सिघ कूदयो ज्यू अग्नि-कूड मे
जाणँ नौहत्यो शेर आज
वो कळछ पडयो हाथी-झुड मे

(२५७)

पाणी मे गठो बीडँ ज्यू
सिघ गठो बीडयो आगि मे
कूदणियो जळ मे न दीसँ
ज्यू सिद्ध नी दीस्यो आगि मे

(२५८)

देखणिया कहै ओ भस्म हुवो
फुतरो पण बाकी रयो नही
लफर मिल गावै सबदानै
वा मुख सू पण को कयो नही

(२५९)

देखँ तो थोडी ताळ पछ
सिघ परगटियो ज्यू अगनदेव
रुस्तम मुख-मडळ तेज घणो
कुण जाणं सिध रो अतर-भेव

(२६०)

तन पर बागो मस्तक मोळयो
कांधै चादर री छिब न्यारी
जद अगन-सपाडो कर रुस्तम
देख्यो प्रगट्यो जद ससारी

(२६१)

सिट्टा रो करळो हाथ लिया
ओ हरयो मतीरो साथ लिया
अगनि मे प्रगट्यो सिध रुस्तम
प्रगटै बासनर आप जिया

(२६२)

सतरासै साल छतीसै मे
आ घटना घटी अनोखी है
पतसा रो नीचो नाक हुयो
अद्भुत कारज कह नोकी है

(२६३)

कह नौरशा, ओ जादू है
कद करामात मानू जादू ?
सिध जादूगर रो खेल रच
कद मानीजै परचो भादू?

- (२६४)

मक्के सू बोर मगा देखां
जे करामात है तेरं मे ।
पण करामात कह पडो क्ठं ?
कूडा नी आऊ फेर मे

(२६५)

ला कयो मर्क रा बोर देख
जे वम हुवं तो चाख देख ।
सिध बोर मगा परचो दीनो
कह आगं हुयसी जकी देख ।

(२६६)

अतर मे ध्यान कियो रुस्तम
कर गोरख श्रीजसनाथ याद
जो मानं पतसा जकी करो
परचो प्रगटावो विकट आज

(२६७)

जद अरसा सतगुरु ओतरिया
वं तीन भवन रा नाथ धणी
आया आगम सू जोगेसर
पतसा रं मुसकल हुवं घणी

(२६८)

चौगड़दे वीचरिया जोगी
जँ पड निजर देखै जोगी
महला मे गढ कगूर्गा पर
सगळै हुग्या जोगी-जोगी

(२६६)

हुरमां-महला मलका जोगी
बीबड़ियान दीसै जोगी
तोबा-तोबा कर तुरकणियां
ल्यै आंख मीच दीस्या जोगी

(२७०)

कइ काळा-पीळा छिबकाळा
कइ लीला भगवा भेष धार
कइ नग-धड़ग खड़ग खडा
कइ रु ड-मुड जट-जूट धार

(२७१)

कइ अला-अला कइ अलख-अलख
कइ बम्ब-बम्ब महादेव बोल
कइ जै-जै सीताराम भणै
कइ हरी-हरी मुख खोल-खोल

(२७२)

कइ नुवा नायदा तुरतपुरी
कइ ग्रोघड, जोगी कनफाडा
कइ अग भभूत रमाय खडा
कइ नागा बावा ग्रल्लाडा

(२७३)

कइ लठधारी कइ मठधारी
कइ पाचू इद्री कस मारी
कह टहलनाथ सुण ग्रहलनाथ
कृपाळ कृपाळी बुध न्यारी

(२७४)

कइ लावा पतळा नाटा-सा
कइ थूळमथूळ जबर जगी
कइ परमहस निरमळ साधु
कई साव सूगला सरभगी

(२७५)

कइ डड-कमडळ ले सोटा
घाटा माळा मोटा मिणिया
तदूरा तूरा इकतारा
झिझा खजरी ले छिणमिणिया

(२७६)

बजली वाजो ले रिणमिगा
कइ लिया बाकिया नागफणी
कइ लिया हाथ मे सारगी
कइ रावणहत्था वीण घणी

(२७७)

कई दम लगा पीता चबडा
कई जटित ज'डा जीरण जोगी
कइ जोगी जोग-जुगत साधक
कइ भव्य-भाल अतर भोगी

(२७८)

कइ लोह-लगोट लगाय खड़ा
कइ इकटगी कइ भग जबडा
कइ दताघर कइ फनटपसा
गाला मे खाडा खड खबडा

(२७९)

कइ नाक नकूडा कइ फीडा
कइ जाबक कवळा कइ चीडा
कइ धूड फाक घबसा-धवसा
कइ चिडी कमेडी ज्यू डीडा

(२८४)

अब एक उपाय रयो बाकी
राजी हिन्दू रो पीर करो
उण आगै गाव-परगना री
धर भेट भली तक्दीर करो

(२८५)

रुस्तम है देव बडो सकड
उण मान्या हुयसी खैरख्वाह
नातर दिल्ली ज फकीरा री
नी हुय ज्यावै बरबादी सा'

(२८६)

अब जेज करो मत पल-छिण री
हुय ज्यावो हाजर थे पतसा
जे और करोला जेज घणी
तो दिल्ली उळटीजंला सा'

(२८७)

सायण-बायण घोडा बगसो
थेली मेलो उण रै आगै
कर हाथ लबा माफी मांगो
मतरो मुसद्दो ले सागै

(२८८)

कर हाथ लबा आयो पतसा
रुस्तम रै कदमा शीश धरचो
तिड़काय दात माफी मागी
रुस्तम रो बो'ळो मान करचो

(२८९)

सिध सेती पतसा अरज करै
ल्यो गाव-पटा थे जागीरी
ल्यो हाथी-घोडा रथ सजिया
ल्यो इछचा जो आवै थारी

(२९०)

पजाब घणो उपजाऊ है
लिख दचू मैं परवाणो पक्को
ले ल्यो की लेणू और कई
मैं कयो करू थारो थक्को

(२९१)

पाछो रुस्तम इसतक बोल्यो
माया री भूख नही लागै
गुरु टुकडो बहुतेरा दीन्यो
म्हे धन-वित नी राखा सागै

(२६२)

म्हे तातो राखा त्याग तणो
माया-ममता मन नी लागै
देणू ही है तो श्रा लिखदे
गुरु-नग्गारा चौवक वागै

(२६३)

नी श्रोर चीज इच्छया म्हारी
वस। टेक भेष री वणी रहै
गुरु-पथ नगारा वजै घणा
नी भलो-बुरो कोई कहै

(२६४)

बीजी है वस्तु ज एक श्रौर
जे देणी श्रादर-भाव थको।
माग्या सू थे मत नट ज्याया
म्नै है लेणी चीज जको

(२६५)

जद घणी श्रदब पतसा बोल्यो
नी हुकम गुरु रो टाळोज
थां सू भळ श्राछी चीज किसी ?
वा बात किसी नी पाळोज।

(२६६)

कह रुस्तम गदली पिळैपाट
जो सीडी सूई बिन तागै
वा म्हारै गुरुवानै सो'वै
सो'वै लिखमादेसर आगै

(२६७)

इण गिदली छाडा और चीज
सिध रुस्तम नी अगेज करी
वा 'बावन-पीरा' करामात
ला गदली गुरु रै भेट करी

(२६८)

सिध रुस्तम ज्यू-ज्यू फरमायो
पतसा वोहि मजूर करयो
लिख दीन्यो • परवाणो पक्को
सिध रुस्तम चरणा माय धरयो

(२६६)

कर दिल्ली सर आयो रुस्तम
धनराज सिध जद काड करया
वां पीठ थाप आसीस दीवि
कह थां सू सगळा काम सरया

(३००)

धिन-धिन रे रुस्तम धिन तन्नै
धिन है तेरो सकळाईनै
परचो दे परचायो पतसा
धिन-धिन तेरी सबळाईनै

(३०१)

तू पथ-धरम रो धणी पको
तू टेक भेष रो है मालक
सिध-साधु तेरा पा नामी
तन्नै पूजै आखो खालक

(३०२)

गुरु-मान और मरजादा री
तै टेक भेष री लीवि बचा
जदलग तेरा गुण गाईजै
रह सिद्ध-पथ अर सबद रचा

(३०३)

बाजो नी मिलतो वोस तणो
उण सरस नगारा घुरै घणा
जिण सदा चराया बाकरडा
वो मिनख केवटै जाण जणा

(३०४)

सूरज शकर अर चाद साख
साखी जसनाथी पथ भरै
छाजूसर जम्माळो धोरो
सिघ सारा थारी कीर्ति करै

(३०५)

आदेश करो मजूर धणी
कर म'र मोकळी म्हा माथै
थारो जस गावण जोग करो
म्हारै पण रैज्यो थे साथै

छैलो वृत्तांत

(३०६)

रुस्तम जैड़ो सिघ और नही
जसनाथ गुरु रो भक्त पक्को
ओखा जग कारज कर चोखा
बजवायो डको गुरु थक्को

(३०७)

सिघ भक्त तपस्वी जोगेसर
सत सत महात्मा ब्रह्मचारी
सिघ सिद्ध-पुरुष है वचनसिद्ध
सिद्ध धर्म-गुरु है आचारी

जस-कीर्ति पताका रुस्तम री
आएं ही जग मे फहरी है
सिध साधु महत बडा जोगी
रुस्तम मे सरधा गैं'री है

(३०९)

जोगेसर सिध रुस्तम बाजै
पण राजेसर रा साज सजै
सिध रुस्तम भागेसर मोटो
आसक्ति ज मन सू सदा तजै

(३१०)

जग मोह्या रुस्तम जमा किया
जिग-होम तणो की पार नहीं
जगनै उपदेश दियो ज घणो
कूडं जग रमणो सार नही

(३११)

सिध-पथ घणो प्रवीण करयो
चौचक बजवाया नगारा
सिध भारतखड प्रसिद्ध हुवो
घण आदर-मान करै सारा

(३१२)

रुस्तम चढ घोडी-पीठ सदा
वो घणौ लाजमै सू चाल
राजा-पतसा चेला उण रा
किण री हिम्मत इणनै पाल

(३१३)

सिध रै माथै मैमद मोळ्यो
ऊपर पण घणौ बणाव किया
हाथां में सोनै रा ककण
कडिया ताती पग फवा रियो

(३१४)

कई मिनख बडा ताजीम-धणी
राजा-म्हाराजा हुय हाजर
निजराणौ पेश करै सिधनै
कर-जोड खडा हाजर-नाजर

(३१५)

सिध सबद अखाडा कथन किया
श्रीकिमन-व्यावलो' ग्रथ कथ्यो
'जसनाथी-राग' गायवे रो
सिध भक्ति-भाव विचार मथ्यो

(३१६)

कथ सबद अखाड़ा ज्ञान घणो
गावण मे सिध री जोड नही
उण किया गायवी घणा जणा
नाचणियां री की ओड नही

(३१७)

रीति-नीति अर धरम-नेम
करतब कंड़ा शुभ काम किसा
कह क्या करणो क्या नी करणो
जग मे है उत्तम काम जिसा

(३१८)

अं सेन बताया सिध रुस्तम
खुद आप किया उत्तम कारज
जग बिना बताया के जाणै
सब विधि बताई है रुस्तम

(३१९)

रुस्तम कीरत कमठाण रचा
चळ आयो है आसण आदू
गुड्डो बांध्यो हरि-भक्ता रो
चाल्यो है रुस्तम रो जादू

(३२०)

सिध बठा ऊचै दूवै पर
ओळै-दोळै बैठा साधु
सिध श्रीमुख सू उपदेश करै
परभाव हुवै जाणै जादू

(३२१)

सिध रुस्तम आदू आसण पर
थरप्यो है उण सत रो सासण
चावो जग नाव चौखळै मे
'जम्माळो' धोरो सिंघासण

(३२२)

झाडी झिंर्गी है वीड जवर
कुमट ककेडा इरणा री
चैं'कै पछी वोलै मधरा
इत डार बडी है हिरणा री

(३२३)

'सिद्धाश्रम' री इण तपो-भोम
निरभै जगळ रा जीव फिरै
रिणघटिया डूकड़ली डोलै
पारधिया नही सिकार करै

(३२४)

गो चरै घास मीठो धामरण
पीवै पालर पाणी नाडी
मधरा-मधरा पछी बोल
छाया गं'री झिणी जाडो

(३२५)

जगळ मे मगळ सिव तणां
तपस्या रै तप री जात जगै
किस्तूरी अगर तगर चदण
जँ धूप-सुगधी घणी बगै

(३२६)

सुरगा सू देव उतर आया
वै सदा वासना रा भूखा
भडारो आठू पो'र चलै
कुण जीमेला जीमण लूखा ?

(३२७)

सो' खलक-मलेक आवै धोरै
कीडी री नाळ जुळै रस्तो
वाही लकडी पण पडै नही
मिनखा सू टूटै है रस्तो

(३२८)

ऊणायत सब आवै अपणी
सिध सारै पण कारज सब रा
रोती जावै हसतो आवै
सिध दुक्ख-दरद मेट सब रा

(३२६)

कइ आवै दीन-दुखी पीडित
कइ आंख अध संतान-हीण
कइ काया-कस्टी पागळिया
उण कष्ट कटै काया प्रवीण

(३३०)

हरि-भक्त महात्मा संत बडा
सिद्ध साधु तपसी जोगेसर
आचारी आवै ब्रह्मचारी
जिज्ञासु साचा परमेसर

(३३१)

तीरथ पण धाम बडो धोरो
ओ धरम-विवेक विचार तणो
इण जुग मे धरम बचै कूकर?
इत मिल-जुल करै विचार घणो

थिरचक आसण

(३३२)

दिन एक विचार कियो रुस्तम
इसतक परण वात विचारी है
घोरै पर पाणी रो फोडो
आवणियानै दुख भारी है

(३३३)

थिरचक परण आसण थरपीजै
जँ पाणी री हो मुकळायत
जँ सुबधी-स्याणा मिनख भला
अर हुवै भोम री उकळायत

(३३४)

सिध सोची मन मे बात इसी
छाजूसर मे मांडू आसण
मेळो थरपू कर भेप बडो
राजा सू धर लेवू सासण

(३३५)

आ धार-विचारी रुस्तमजी
आयो बीकाणै राज कनै
मैं थरपूला मेळो आसण
ये धरती बगसावो मनै

(३३६)

राजा रै आप हजूर हुवो
दी राजा भोम बड़े आदर
राजा रुस्तम रो मान कियो
कर दीनो परवाणो हाजर

(३३७)

सिध थान रच्यो छाजूसर मे
जसनाथी-पथ तणो सासण
सब नेम-कायदा बाध पका
सब माथै सिध रो अनुसासण

(३३८)

सिध 'भेष' कियो मेळो माड्यो
इडो चाढ्यो हे देव तणो
सिध होम तेवड्यो जबर-जग
जीमण जूठण पण कियो घणो

(३३९)

तप ध्यान समाधि जोग-जुगत
जिग होम-जोत पण हुवै अठै
शोभा सुरगा-सी देव रमै
सिद्धाश्रम थरप्यो सिद्ध जठै

(३४०)

छाजूसर वणग्यो धरम-केन्द्र
वैठे रुस्तम-सा सिद्ध वठै
ऋषि मुनि जति जोगेसर तपसी
सब चाल दूर सू आवै अठै

(३४१)

सिध कीवि वडै घर जावण री
नी छानै-छुळकै रै' त्यारी
सबनै उण घर जाया सरसी
सिध देव भला हो श्रोतारी

(३४२)

तन पचभूत रो मिट्यो सरै
नी सासा एक बधै सासा
तिल-राई सूत घटै न बधै
कितरी विध कोय करै खासा

(३४३)

आवै जावण सदेश जणा
इत रै'णो किण रो किया कणा?
मोटो डाढो लूठो जगी
किण री नी काया अमर जणा

(३४४)

सिद्ध रुस्तम री जावण अवधि
एकै सानै सातै पाचै
माहो सुद सात्यू तिथ वडी
सुरगा रै सिद्ध ढळचो साचै

(३४५)

सिद्ध लीवि समाधि छाजूसर
ऊपर पण मिदर है सुदर
'बाडी' 'जसनाथ तणी वाजै
सुरगा रा देव रमै अदर

(३४६)

सुरगा 'मे जै-जैकार हुवो
जद बाह पसारचां देव खड़ा
धरती रो देव पधारीजै
स्वागत मे ऊभा देव बड़ा

(३४७)

मानीजै चोकोणै [illegible]
शिवरात [illegible]
मेळो मद [illegible]
[illegible]

(३४८)

'सिद्धराज' लिख्यो सिध रुस्तम पर
सिध साधु सरधा सूं सुणियो
'सूरजशंकर' सुध भाव थकां
कुळगुरु रो ज्ञान सदा गुणियो

(३४६)

उकती नीं देखो चमत्कार
नीं देखोला इत अलंकार
सत-कथा अठै देखो केवळ
सीधो-सादो औ कथासार

(३५०)

छंद-भंग गति-भंग दोष हुवै
का दोष हुवै बीजो कोई
गुणिजन पाठक सब छिमा करै
वै छिमा करै बांचै सोई

(३५१)

सिधराज पढै अर सुणै-गुणै
बांचै अरथावै कोड थको
श्रद्धासारू कीं भेट धरै
सुख पावै इण विध करै जको